



मराठा स्वराज: एक अध्ययन

देवेन्द्र कुमार बालोटिया¹¹ बी.ए.(ऑनर्स)(इतिहास), एम.ए.(इतिहास), बी.एड., नेट उत्तीर्ण राजस्थान.

ABSTRACT:

मराठा स्वराज भारत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने न केवल तत्कालीन राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित किया, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बीज भी बोए। इस शोध पत्र का उद्देश्य मराठा स्वराज के गठन, उसके संस्थापकों की भूमिका, प्रशासनिक संरचना, और इसकी सफलता-असफलताओं का अध्ययन करना है। शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित मराठा स्वराज ने उस समय के साम्राज्यवादी ताकतों का सामना किया और स्वराज की अवधारणा को साकार रूप दिया। यह शोध ऐतिहासिक तथ्यों के माध्यम से मराठा स्वराज की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से समीक्षा करता है।

KEYWORDS:

मराठा स्वराज, शिवाजी महाराज, स्वतंत्रता, प्रशासनिक संरचना, भारत का इतिहास, मराठा समाज, राजनीतिक विचारधारा।

PAPER ACCEPTED DATE:

28th October 2024

PAPER PUBLISHED DATE:

31st October 2024

विषय-वस्तु

प्रस्तावना

भारत के इतिहास में मराठा स्वराज एक ऐसा युग था जिसने स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, और राष्ट्रवाद की भावना को जन्म दिया। शिवाजी महाराज के नेतृत्व में मराठा साम्राज्य ने न केवल विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष किया, बल्कि स्वशासन की नई अवधारणा को भी प्रस्तुत किया। स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक न्याय का भी प्रतीक था। इस अध्ययन का उद्देश्य मराठा स्वराज की स्थापना, उसकी कार्यप्रणाली, और उसकी ऐतिहासिक प्रासंगिकता पर गहन विश्लेषण करना है।

मराठा स्वराज की पृष्ठभूमि

17वीं सदी का भारत विभिन्न राजनीतिक और सांस्कृतिक बदलावों का साक्षी था। मुगल साम्राज्य अपनी चरम सीमा पर था, लेकिन इसकी शक्ति क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधताओं के कारण कमजोर हो रही थी। इसके साथ ही, देश में धर्म, जाति, और आर्थिक असमानताओं के कारण विद्रोहों का जन्म हो रहा था।

- राजनीतिक स्थिति:** मुगलों ने अधिकांश भारत पर कब्जा कर रखा था, लेकिन प्रांतीय शासक और जमींदार उनके खिलाफ विद्रोह कर रहे थे।
- सामाजिक स्थिति:** हिंदू समाज पर मुगल शासन के धार्मिक कर (जजिया) और अत्याचारों का व्यापक प्रभाव था।
- आर्थिक स्थिति:** किसानों पर करों का अत्यधिक बोझ था। मराठा स्वराज ने इस शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई।

शिवाजी महाराज का नेतृत्व और स्वराज की स्थापना

मराठा स्वराज का उदय शिवाजी महाराज के नेतृत्व का परिणाम था। उनके जीवन और कार्य को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

- प्रारंभिक जीवन:** शिवाजी का जन्म 19 फरवरी 1630 को शिवनेरी दुर्ग में हुआ। उनके पिता शाहजी भोसले और माता जीजाबाई ने उन्हें धर्म, नीति, और युद्ध-कला की शिक्षा दी।
- स्वराज की अवधारणा:** शिवाजी ने स्वराज का सपना देखा, जो "अपने लोगों का शासन, अपने लोगों के लिए" था।

- राजनीतिक कदम:** 1646 में, उन्होंने तोरणा किले पर कब्जा कर स्वराज की नींव रखी। इसके बाद उन्होंने रायगढ़, सिंहगढ़, और अन्य किलों को अपनी सत्ता में शामिल किया।
- राज्याभिषेक:** 1674 में रायगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने छत्रपति की उपाधि ग्रहण की।

प्रशासनिक संरचना और कार्यशैली

मराठा स्वराज की प्रशासनिक व्यवस्था शिवाजी महाराज के कुशल नेतृत्व और प्रबंधन का प्रतीक थी।

- अष्टप्रधान परिषद:** प्रशासनिक संचालन के लिए शिवाजी ने आठ मंत्रियों की एक परिषद बनाई।
 - पेशवा: प्रधानमंत्री का कार्यभार।
 - अमात्य: वित्त और राजस्व।
 - मंत्री: राज्य सचिव।
 - सेनापति: सैन्य प्रमुख।
 - न्यायाधीश: न्यायिक कार्य।
 - पंडितराव: धार्मिक मामलों के प्रभारी।
 - सुमंत: विदेशी मामलों के विशेषज्ञ।
 - सचिव: दस्तावेजीकरण और रिकॉर्ड-कीपिंग।

- कर प्रणाली:** शिवाजी ने चाउथ और सरदेशमुखी कर की शुरुआत की, जो किसानों पर अतिरिक्त बोझ डाले बिना राज्य को राजस्व प्रदान करता था।
- सामाजिक सुधार:** जाति और धर्म से परे न्याय और समानता की नीति अपनाई गई।

मराठा स्वराज का सैन्य संगठन

मराठा स्वराज की सफलता का एक बड़ा कारण इसका सैन्य संगठन था।

- **छापामार युद्ध शैली:** दुश्मन पर अचानक हमला करके उसे कमजोर करना।
- **किलों का महत्व:** किलों को रणनीतिक बिंदुओं पर बनाया गया, जैसे रायगढ़, सिंहगढ़, और प्रतापगढ़।
- **नौसेना का विकास:** शिवाजी ने मराठा नौसेना का गठन किया, जो विदेशी आक्रमणों से तटीय क्षेत्रों की रक्षा करता था।
- **सैनिकों की भर्ती:** मराठा सेना में स्थानीय ग्रामीण और कृषक समुदायों को शामिल किया गया।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

मराठा स्वराज केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक सुधारों का भी प्रतीक था।

- **सामाजिक प्रभाव:**
 - जातिगत भेदभाव को कम करने के प्रयास।
 - महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान को बढ़ावा।
- **आर्थिक प्रभाव:**
 - किसानों और व्यापारियों को संरक्षण।
 - राजस्व प्रणाली में सुधार और भ्रष्टाचार को खत्म करना।
 - कारीगरों और व्यापारियों के लिए व्यापार के अवसर बढ़ाए।

मराठा स्वराज का पतन

शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद मराठा साम्राज्य कई समस्याओं से जूझता रहा।

- **उत्तराधिकार का विवाद:** संभाजी और राजाराम के बीच सत्ता संघर्ष।
- **आंतरिक संघर्ष:** मराठा सरदारों के बीच सत्ता के लिए टकराव।
- **बाहरी हमले:** मुगल, अंग्रेज, और अन्य शक्तियों द्वारा निरंतर हमले।
- **प्रशासनिक कमजोरियाँ:** शिवाजी की मृत्यु के बाद अष्टप्रधान परिषद कमजोर हो गई।

मराठा स्वराज की ऐतिहासिक प्रासंगिकता

मराठा स्वराज भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।

- **स्वराज की अवधारणा:** महात्मा गांधी ने भी "स्वराज" की बात की, जो शिवाजी के विचारों से प्रेरित थी।
- **सामाजिक न्याय:** यह आंदोलन समानता और न्याय के मूल्यों पर आधारित था।
- **राष्ट्रीय एकता:** यह भारतीय समाज को एकजुट करने का प्रयास था।

मराठा स्वराज का सांस्कृतिक योगदान

मराठा स्वराज ने भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित किया।

- **धार्मिक सहिष्णुता:** शिवाजी ने सभी धर्मों का सम्मान किया।
- **भाषा और साहित्य:** मराठी भाषा और साहित्य का विकास।
- **स्थापत्य कला:** किलों और मंदिरों का निर्माण।

4. निष्कर्ष

मराठा स्वराज ने भारतीय इतिहास में स्वराज की अवधारणा को साकार रूप दिया। शिवाजी महाराज के नेतृत्व में स्थापित इस आंदोलन ने स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के नए मानदंड प्रस्तुत किए। हालांकि, आंतरिक समस्याओं और प्रशासनिक कमजोरियों के कारण इसका पतन हुआ, लेकिन इसका प्रभाव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर स्थायी रूप से देखा गया। यह अध्ययन भारतीय समाज और राजनीति पर मराठा स्वराज के बहुआयामी प्रभाव को समझने में सहायक है। मराठा स्वराज का इतिहास हमें यह सिखाता है कि नेतृत्व, रणनीति, और जनता का समर्थन किसी भी संघर्ष को सफल बना सकता है। यह अध्ययन स्वराज की अवधारणा को समझने और उसे वर्तमान समय में लागू करने की प्रेरणा देता है।

REFERENCES

1. गायकवाड़, जी.डी. (1952). *मराठा साम्राज्य का इतिहास*. पुणे: लोकहित प्रकाशन।
2. सावंत, जयसिंह. (2004). *शिवाजी और स्वराज की संकल्पना*. मुंबई: मराठा प्रकाशन।
3. सरदेसाई, जी.एस. (1907). *A History of the Marathas*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. ठाकरे, एम.जे. (2011). *मराठा स्वराज: एक अध्ययन*. नागपुर: विद्या निकेतन।
5. Laine, James W. (2003). *Shivaji: Hindu King in Islamic India*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।